Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 13, Issue September 2022 | Impact Factor 5.004

साहित्य सुफियाना परम्परा में धर्म, दर्शन व संगीत की विवेचना

मधु शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत (गायन) विभाग, सनातन धर्म कालेज, अम्बाला छावनी

ABSTRACT

सूफी मत के प्रांरभिक पैगंबर हजरत मुहम्मद के जीवन की कतिपय अलौकिक अनुभूतियों पर आधारित थे। उनके जीवन में दो ऐसी दिव्य घटनाएं हुई थी जो अत्यंत रहस्यपूर्ण एवं चमत्कारी थीं। पहली घटना हीरा पर्वत की कंदरा में घटित हुई थी जब हजरत मुम्मद को ईश्वर का दिव्य संदेश प्राप्त हुआ था। दूसरी घटना थी मक्का से येरूसलम की रात्रि यात्रा जब उन्हे दिव्य स्वरूप का सामीप्य–लाभ हुआ था। उनके इस अद्भुत अनुभवों को प्रारम्भिक सूफियों ने अपनी उपासना एवं आचरण की आधारशिला बनाया पैगंबर की चरित्र उनका आदर्श था। उनके द्वारा उपदिष्ट सादगी, सदाचार एवं ईश भक्ति के संदेश उनके मूलभूत सिद्धान्त बने। उनका अनुकरण करते हुए सूफी साधक तपश्चर्या, प्रभु–उपासना एवं लोक कल्याण के कार्यो में रत हुए। सांसारिक कृत्यों की उपेक्षा कर उन्होंने अपना जीव ईशोपना हेतु समर्पित कर दिया। इस्लाम के पैगम्बर हजरत मुहम्मद के जीवन–काल में सूफी मत का सूत्रपात हो गया था।

भारत में सूफी साहित्य तथा संगीत अपने युग की चेतना और जन जीवन की संस्कृति का अमूल्य कोष है। भारत में सूफी संत कवियों तथा संगीतज्ञों ने लोक विश्वास, लोक परम्परा, लोक–धर्म की अभिव्यक्ति ही नहीं की, बल्कि व्यापक अर्थ में मानव मूल्यों की रक्षा का श्रेय भी प्राप्त किया ।

Key Words: सूफी ,पैगम्बर, कुरान, हदीस, कव्वाली।

सूफी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग हजरत मोहम्मद साहब के देहावसान के लगभग 200 वर्ष पश्चात् 9वीं शताब्दी के मध्य बसरा के अरबी लोक साहित्य ने किया था । इनके अनुसार इसका सर्वप्रथम प्रयोग कूफा के अबू हाशिम के लिए हुआ । तत्पश्चात 50 वर्षो के अन्दर इराक तथा 200 वर्ष में सभी मुस्लिम रहस्यवादियों के लिए इसका व्यवहार होने लगा । ये सभी लोग उज्जवल जीवन व्यतीत करते थे, जो व्यक्ति सन्त थे, जिनकी मनोवृत्तियों उज्जवल थी, जो धर्माचरण करते थे, जिनके अन्तः स्थल में ज्ञान का प्रकाश हो गया था और जो सादा जीवन व्यतीत करते थे, वो सूफी संत कहलाए। सूफियों ने अपने हर कार्य एवं सुधार को कुरआन और हदीस द्वारा दी गयी प्रेरणा के अनुसार ही किया। उनका कहना है कि कुरान में खुदा ने कई स्थानों पर कहा है, ''तुम खुदा से मोहब्बत (प्रेम) करो, खुदा तुमसे मोहब्बत (प्रेम) रखता है।'' जिसका वर्णन कुरान में इस प्रकार किया गया है:– भावार्थ – ''अगर तुम सच्चे मन से अल्लाह से प्रेम रखने वाले है। तो तुम मेरी पैरवी करो (मेरे बताये हुए मार्ग को प्रशस्त करने) इससे केवल यही नहीं होगा कि तुम अल्लाह

PURVA MIMAANSA

से प्रेम करने वाले हो जाओगे, बल्कि खुदा भी तुमसे प्रेम करने लगेगा।''

अबुल हसन अल नूरी के अनुसार सूफीमत संसार की कुरीतियों के प्रति घृणा एवं परमात्मा (अल्लाह) के प्रति अनन्य प्रेम का प्रकाशन है।

जनेह का कथन है कि पुरुष में 'स्व' की समाप्ति और ईश्वरत्व की उद्‌बुद्धि सूफीमत है ।

अल गजाली ने भी शान्त भाव से ईश्वर में अनुक्ति को तसव्वुफ (सुफी मत) कहा ।

अबू सईक के विचारानुसार परम् सत्ता के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण ही सूफीमत है ।

सूफी मत के सिद्धान्तानुसार यह ईश्वर सत्य रूप है और नित्य सत्य का स्वरूप प्राप्त करने के लिए आत्मशुद्धि अनिवार्य है । आत्मशुद्धि के लिए मन और इन्द्रियों का निग्रह एवं आत्म संयम अत्यावश्यक है ।

सुफियाना विचारधारा की एक यह बहुत बड़ी विशेषता है कि उसका आधार सामंजस्य पर टिका है। निर्गुण–निराकार ईश्वर को प्रेम की ताकत से प्राप्त कर लेने की उनकी अभिलाषा सभी धर्मों को उनके प्रति आकृष्ट करती है। संगीत तथा ईश्वरीय आस्था का इतना सुन्दर सम्मिश्रण बहुत कम देखने को मिलता है।

नाद जब साधना के द्वारा प्राप्त, उदात्त एवं सु–संस्कृत हो जाता है तब वह अलौकिक होकर ईश्वर तक अवश्य पहुँचता है । सूफियों के संगीत में ऐसा ही सरूर तथा मतवालापन है। सूफियाना कब्वालों की मस्ती स्वयं उन्हें और श्रोताओं को मतवाला कर देती है । इस मतवालेपन में वे सुध–बुध खोकर तालियां बजाते हुए नृत्य करने लगते हैं ।

कव्वाली सूफियों को मतवाला बनाकर परमेश्वर तक ले जाती है। आचार्य बृहस्पति का कथन है, कि प्रसिद्ध सूफी संत हज़रत निजामुदीन चिश्ती संगीत की आध्यात्मिक महनता के ज्ञाता थे । ये कव्वालों का गाना सुनकर नाचने लगते थे कभी कभी तो कई–कई दिन तक भाव–मग्न रहते थे । ख्वाजा सैयद मुहम्मद इमाम के छोटे भाई खवाजा सैयद मूसा भी महान् संगीत–मर्मज्ञ थे ।

हजरत निजामुदीन प्रसिद्ध सूफी कवि शेख फरीद (गंज–ए–शकर) के मुरीद थे औश्र सूफी विचारधारा के प्रचारक हलरत अमीर खुसरो, हजरत निजामुदीन औलिया के मुरीद (शिष्य) थे ।

आज भी सूफी सभाओं में लोग सूफी संगीत से प्रभावित होकर पूर्णानन्द अवस्था का अनुभव करके नृत्य करना प्रारम्भ कर देते हैं क्योंकि भाव–विभोग होकर किसी भी धार्मिक सम्मेलन में उस परम–पिता परमात्मा की याद में नृत्य करना भी इबादत है । प्रस्तुत है इसी सन्दर्भ में एक सुप्रसिद्ध पंजाबी काफी:

''तेरे इश्क नचाया कर थईया थईया ।
तेरे इश्क ने डेरा मेरे अन्दर कीता,
भर के जहर प्याला मै आपे पीता,
झबदे तुहडी वे तबीबी नहीं ते मैं मर गईयां ।

एस इश्क की झुग्गी विच मोह बुर्लेदा,
सानूं किबला ते काबा सोहना या दिर्सेदा,
सानूं घायल करके फेर खबर न लईआं ।
बुल्ला, शौह नू लै चलों शाह इनायत दे बूहे,
जिसने मैनू पुआए चोले सावे ते सूहे,
जां मै मारी ए अड्डी मिल पिआ ए वहीआ ।
तेरे इश्क नाया कर थईया थईया ।

इस काफी में सांई बुल्लेशाह अपने मुर्शिद से कहते हैं कि तेरे वियोग ने मुझसे अनोखा नाच नचवाया है । तेरे प्रेम का मुझे रोग लग गया है। तू ही वह वैद्य (तबीब) है जो इलाज कर सकता है । तू ही मेरा काबा है औश्र तू ही मेरा किबला है। काफी के अन्त में आप मुर्शिद के प्रति अपना आभार प्रकट करते हुए कहते है। कि उस प्रभु ने स्वयं दया करके मुझे ऐसे मुर्शिद से मिलाया । जिसने मुझे आध्यात्मिकता के अनूठे रंग में रंग दिया ।

सूफी दर्शन में प्रेम को बहुत महत्व दिया गया है। सूफी संतो के विचार में ईश्वर अनन्त सौन्दर्य (नूर) का मालिक है ये लोग ईश्वर को (प्रियतमा) का रूप मानते है उसकी खोज मे सूफी साधक अपना पूरा जीवन लगा देता है । उनका विश्वास है कि ईश्वर अमर सौन्दर्य है तथा उसकी प्राप्ति भाव – विभोर होकर प्रेम भावना से संगीत के माध्यम से की जा सकती है । अतएव सूफी परम्परा में संगीत और सौन्दर्य को पर्याप्त महत्व दिया गया है। सुफियाना परम्परा में जिक्र, हाल, तरीकत, मारीफत और हकीकत आदि सिद्धान्तों के परिपालन द्वारा ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताया है ।

सूफियाना परम्परा में तरीकत हृदय की पवित्रता स्पष्ट तथा शुद्ध मन द्वारा ध्यान चिंतन की अवस्था है और हकीकत अवस्था वह है जिसमें अल्लाह अथा परम–तत्व की एकता तथा उसके गुणों और उसकी कृपा का अनुभव किया जाए और सत्यानुभूति जनित सिद्धावस्था 'मारीफत' अवस्था है । सुफी दर्शन के अनुसार जीवन केवल पथ–बिन्दु है, जिसके द्वारा ईश्वर की सृजन शक्ति का संचार होता है ।

सूफी दर्शन लौकिक तथा अलौकिक में कोई अन्तर न मानते हुए परमार्थ तत्व को चिन्मयी इच्छा शक्ति और सौन्दर्य के आत्मप्रकाश द्वारा अनुभव करते हैं ।

The Cardinal Features of Sufi culture are-

(a) God obtains in all and all obtains in God-

(b) All happiness take place as per the will of God. Nothing happens if he does not obtain it-

(c) The soul is distinct from the physical body and will merge into divine reality according to one's deeds.

(d) It is the Guru (Murshed) whose grace shows the way and leads to union with God-

(e) Religion is the way of life; it does not necessary lead to "Nirvana"

सूफियाना परम्परा में धर्म, दर्शन एवं संगीत के अतिरिक्त 'गुरु के महत्व का भी प्रतिपादन किया है। उनके अनुसार गुरू ही गन्तव्य तक पहुँचने का मार्ग बतलाता है । वही प्रियतम (परमात्मा) के (भवन) का (राजपथ) दिखलाता है।

उस गुरू (मुर्शिद) के प्रति विनस एवं समति होना सूफी का परम कर्तव्य है। गुरू के बिना यह सच्चा मुरीद (शिष्य) नहीं हो सकता, क्योंकि गुरु कृपा के बिना वह अर्न्तमुख नही होगा और परमसत्ता का प्रकाश नही पा सकेगा। गुरु महिमा का बखान सुप्रसिद्ध सुफी संग 'बुल्लेशाह' इस प्रकार करते हैं ।

बुल्ले नूं लौकी मती देंदे, बुल्लया आ बैजा मसीती,
विच असीतां दे की कुछ होंदा, जे दिलों नमाज न नीती,
बाहरों पास करें कि होंदा, जो अंदरे रही पलीती,
बिन मुर्शिद कामिल बुल्लया, तेरी गई ए इबादत कीती ।

इस प्रकार सूफी मत ईश्वर के लिए जीवन–मरण है। सूफी मत इस्लाम धर्म की वह उदात्त आध्यात्मिक शाखा है जिसमें ब्रह्मानुभूति के लिए माधुर्य भाव का विशेष प्रश्रय दिया गया है। तसव्वुक वह ज्ञान है जो ईश्वर के अस्तित्व को समझने में सहायता करता है रचना और रचयिता दोनों में प्रेम उत्पन्न करता है।

सन्दर्भ सूची

1. सुनीता शर्मा, भारतीय संगीत का इतिहास (दार्शनिक एवं आध्यात्मिक), प्रथम संस्करण 1994, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. रेणू सचदेव, धार्मिक परम्पराएँ एवं हिन्दुस्तानी संगीत, राधा पब्लिकेशन, संस्करण 1999, नई दिल्ली।
3. आचार्य बृहस्पति मुसलमान और भारतीय संगीत, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 974।
4. हरभजन सिंह, साई बुल्लेशाह, हिन्दी पाकेट बुक्स, 2017 ।
5. संत सिंह सेखों एवं करतार सिंह दुग्गल, ए हिस्ट्री ऑफ पंजाबी लिट्रेचर, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली (प्रथम संस्करण, 1992) ।

PURVA MIMAANSA